डा. धीरेन्द्र वर्मा (17 मई, 1897- 23 अप्रैल, 1973)

डा. धीरेन्द्र वर्मा का जन्म बरेली, उत्तर प्रदेश, में हुआ था। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति वास्तविक प्रेम, शोधपरक वैज्ञानिक दृष्टि लेकर धीरेन्द्र वर्मा जी उस समय हिंदी साहित्य के अनुशीलन और भाषा शास्त्र के क्षेत्र में उतरे जब न तो हिंदी साहित्य के उच्च स्तरीय अध्ययन और शोध को व्यवस्थित और सुदृढ़ आधार मिल पाया था और न ही ऐतिहासिक या वर्णात्मक किसी भी तरह की हिंदी भाषा शास्त्रीय गंभीर अध्ययन-अध्यापन की परम्परा अपनी जड़ें जमा पाई थीं । उन्होंने हिंदी की समस्याओं पर भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि से विचार कर हिंदी के प्रचार-प्रसार की बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया। हिंदी साहित्य के उच्च स्तरीय अध्ययन-अध्यापन और अनुशीलन को एक ठोस व्यवस्था दी। भारतीय चिंतन परम्परा का सांस्कृतिक आधार लेकर अपनी गंभीर चिंतन-मनन शैली और शोध दृष्टि के बल पर उन्होंने हिंदी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन और शोध को नई गति दी। उनकी प्रेरणात्मक दृष्टि ने हिंदी शोध का नवीन मार्ग प्रशस्त करते हुए हिंदी साहित्य के गंभीर अध्येताओं और शोधकर्ताओं की एक लंबी श्रृंखला तैयार की। वर्मा जी साहित्य और भाषा के उन्नयन संबंधी अन्य कार्यों से भी जुड़े। इस दिशा में उन्होंने “अखिल भारतीय हिंदी परिषद” की स्थापना की और वहां से “हिंदी अनुशीलन” नामक त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। वर्ष 1958-59 में वे लिग्विस्टक सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रहे। प्रथम “हिंदी विश्वकोश” के प्रधान संपादक रहे। दो खंडों में प्रकाशित “हिंदी साहित्य कोश” के प्रधान संपादक रहे। इनके द्वारा लिखी गई “हिंदी भाषा का इतिहास” पुस्तक हिंदी भाषा का प्रथम वैज्ञानिक इतिहास है।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं - हिंदी राष्ट्र, हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी भाषा और लिपि, नवीन हिंदी व्याकरण, ब्रजभाषा व्याकरण, मध्य देश तथा मेरी कालेज डायरी।